इंजी
लते है

८
आ



नाम · रामदास अकेला
पिता : स्वर्गीय श्री बलिराम भगत
जन्म · चौबीस मार्च
उन्नीस सौ बयालिस
जन्म स्थान · ग्राम लखनेपुर
पोस्ट घनश्यामपुर
जिला जौनपुर उ.प्र
परिवार · पत्नी,
पुत्र--सत्य,प्रेम ज्योति,
पुत्रियाँ--सुनीता,
अनीता, विनीता
स्थायी पता · अकेला निवास
सा. 2/398 डी-5
पाण्डेयपुर वाराणसी
साहित्यिक परिचय · गीत, नवगीत,
ग़जल, विधा मे रचनाये
करने मे सतत् साधनारत,
आकाशवाणी से नियमित
सम्बद्ध मचों पर एक
सम्मानित स्थान लगभग 400
गीतों, ग़जलों का सग्रह
अध्यक्ष--'अदबी सगम'
उर्दू--हिन्दी साहित्यिक
सस्था वाराणसी
रचनायें : प्रथम प्रकाशित
ग़ज़ल सग्रह
आइने बोलते हैं
गीत सग्रह प्रकाशनाधीन
सम्प्रति सीनियर पोस्टमास्टर
वाराणसी

आइने बोलते हैं

आदमी की तहे खोलते हैं
जब कभी आइने बोलते हैं

रामदास अकेला

आइने बोलते हैं

आइने बोलते हैं

(ग़ज़लें-नज़्में-कतात)

राम दास अकेला

प्रकाशक
सत्य प्रकाशन
प्रेम चन्द नगर
पाण्डेयपुर वाराणसी
221002

प्रथम संस्करण
1999

मूल्य 100 रु. मात्र

मेरी

प्रेरणास्रोत

और

सुख दुख

की साक्षी

धनराजी

के

नाम ...

क्रमांक

****

आइनें बोलते हैं : एक एहसास

·डा कलीम कैसर

आइने बोलते हैं सामाजिक दुख दर्द का अइना है, सामाजिक स्वरुप की हूबहू तस्वीर है समाज की इस तस्वीर को जब कभी भाषा, भाव और सार्थक सोच की सुगमता प्राप्त हो जाती है तो समाज मे हलचल की सी दशा पैदा हो जाती है। रामदास अकेला जी की कल्पनाए इस सकलन मे स्पष्ट रुप से उभर कर सामने आई है। आजके समाज और सामाजिक व्यवस्था के चेहरे पर भेद भाव विसगतियो, दुख दर्द ऊँच नीच तथा अनेकानेक प्रकार की विडम्बनाओ की खराशे साफ दिखाई देती हैं जिसे देखने और महसूस करने वाली न्गिाहे होनी चाहिए, अकेला जी ने इसे देखा, भोगा और महसूस करके कागज पर उतार दिया है।

कोई भी रचनाकार जिस दर्द विशेष के कसक मे जीता है उसे वो ही महसूस कर सकता है वो अपनी भावनाओ के सगमरमर पर शब्दो की शिल्पकारी करके अपनी साहित्यिक जिम्मेदारी का निर्वाह करता है आइने बोलते हैं की रचनाये (शायरी) अकेला जी की आशाओ का प्रतिफल है इसमे परम्पराओ से कुछ अलग हट कर सोची गयी बात लिखी गयी है इसमे शब्दो की जादूगरी नही है जो हम बोलते हैं वही हमारी शायरी है अर्थात समाज के 75% लोगो की भावनाओ की शायरी है। यह समाज के उस वर्ग का दुख दर्द है जो सिर्फ दुख झेलने के लिए अत्याचार बरदाश्त करने के लिए ही पैदा हुआ है। इनमे ग़रीबी, हीनता एव सामाजिक विषमताओ की मुँह बोलती तस्वीरे है। इस सकलन की रचनाये आपको अवश्य आकर्षित करेगी। रचनाकार क्या कह रहा है ? क्या कहना चाहता है इसे जानने समझने **और** महसूस करने मे आपको तनिक भी समय नही लगेगा।

अकेला जी की सोच सकरात्मक है इसीलिए वो आइने को जबान दे रहे है। आइना क्या बोल रहा है? इसे सुनना, सोचना या इस पर कान धरना आपका काम है क्योंकि यह दर्द केवल उनका नहीं यह दुख आधे से अधिक लोगो का है।समय के नब्ज पर उँगली रखना रचनाकार का काम है। उसे महसूस करना उसकी प्रशसा या आलोचना करने की गुंजाइश अर्थहीन होती है क्योकि ये केवल रचनाये नही अर्थ पूर्ण इतिहास है जिसे नकारा नहीं जा सकता।

हम जिस परिवेश मे जी रहे हैं क्या वो जीने योग्य है? क्या हमे वही सुविधाये सहूलियते प्राप्त हैं जो चन्द लोगो का मुकद्दर बन चुकी है? क्या ईश्वर केवल उन्ही का है जो समाज के समस्त नियम कानून, विधान बनाते है? शायद ऐसा नही है वो कुछ लोग जिनके पास चिरागो के ढेर है, वे तो चाहते ही हैं कि ये राते खूब लम्बी हो, मगर इन लम्बी रातो मे भूख और बेबसी या उकताहट के कारण हमारे बच्चो को कराहे वो कब महसूस कर सकेगे?

अकेला जी की जिन भावनात्मक रचनाओ ने मुझे प्रभावित किया है निम्नलिखित है

महलो मे रहने वाले भूखे है कितने
मेरे कुछ टुकडो पर घात लगाए है

कितने राम अभी जगल मे भूखे प्यासे फिरते है
लेकिन पत्थर दिल लोगों मे उनकी है औकात कहाँ
अब्रेकरम की चाह न कर हर ओर बमो की बारिश है
चाँद जवाँ क्या छत पर आये ऐसी कोई रात कहाँ

कुछ लुटेरे घरो मे तभी आ घुसे
दूर नजरो से जब सावधानी रही
उम्मीदे वफ़ा बस उन्ही से है क़ायम
झुलसते नहीं जो शरारो पे चलके

वो ही ईसा वो ही मूसा वो गुरु और राम भी
हम समझते है मगर तू भी समझ पाए तो ठीक

उसने अमृत कहा पी गए हम
जबकि मालूम था ये ज़हर है

रोशनी को तरसती हैं ऑखे
किस तरह मै कहूॅ ये सहर है

सोम को पूरब दिशा मे घर किसी का जल रहा
सोचते हैं आग हम दिगशूल मे कैसे बुझाये

कौन सी उम्मीद पे खिल पायेगा अपना चमन
जबकि रितु पतझड की और काटा हर इक दामॉ मे है

अकेला जी के ये अशआर ऐसे है जिन्हे समझने के लिए आपको अपनी यादो के पट नही खोलने पडेगे या मस्तिष्क पर किसी प्रकार का जोर नही डालना पडेगा - ये तो साधारण भाषा शैली के उदगार है जिन्हे हम आप अच्छी तरह समझते और महसूस करते हैं। ये इसी समाज की विडम्बना है। दुनियॉ मे परमाणु बम का परीक्षण हो रहा है। कम्प्यूटर काजादू सर चढ कर बोल रहा है लोग चॉद पर घर बनाने वाले हैं और हम अपने अध विश्वासो के अधे कुए मे बैठे परम्पराओ की दुहाई दे रहे हैं। सच पर झूठ का और झूठ पर सच का परदा डाल रहे हैं। मानवता दम तोड रही है और हम एअरकन्डीशन्ड कमरो मे बैठकर सामाजिक उत्थान की योजनाओ को अन्तिम रुप ही देते रह जाते हैं।

इस भागती दौडती ज़िन्दगी मे कम से कम एक साहित्यकार के पास अपने समस्त दायित्व के निर्वहन के साथ इतना समय अवश्य निकल आता है कि वो मानवता एव अपने आस पास के समाज के बारे मे सोच सके। उसे महसूस कर सके। रचनाकार समस्याओ का हल तो नही दे सकता क्योकि वो उसके हाथ मे नहीं है मगर समस्याओ की ओर इशारा

अवश्य कर सकता है। एक रचनाकार की हैसियत शरीर मे ऑखो की तरह होती हैं यदि शरीर के किसी भी हिस्से मे दर्द है तो सबसे पहले ऑख रोती है। उसी तरह एक रचनाकार समाज के दुख दर्द पर ऑसू बहाता है।

मेरे ख़्याल से अकेला जी की पहली कोशिश 'आइने बोलते हैं' के रूप मे किसी भी दृष्टि से घाटे का सौदा नही है। उनकी रचनाए उन्हे कभी सेवानिवृत्त नही होने देगी क्योकि बकौल जिग़र मुरादाबादी -

ये इश्क नही आसा बस इतना समझ लीजे
इक आग का दरिया है और डूबके जाना है

अभी अकेला जी का साहित्यिक सफ़र शुरु हुआ है रफ़्ता रफ़्ता देखिए होता है क्या ?

निवास रजिया मंजिल
बलरामपुर
271201
उ प्र

डा-कलीम कैसर
प्राचार्य
फैसल महाविद्यालय तुलसीपुर
बलरामपुर

****

आइने बोलते हैं,

-के सबध मे

अभिमत

श्री रामदास अकेला की आइने बोलते है की पाण्डुलिपि देखने को मिली । श्री रामदास अकेला को मै विद्यार्थी जीवन से जानता हूँ। सन 1957 ई. मे विधायक होने के बाद इनके गॉव लखनेपुर और इनके घर जाने का भी मुझे अवसर लगा है। उस समय का सीधा सादा बालक इतनी अच्छी गज़ले लिख सकता है, जानकर आश्चर्य और खुशी दोनो हुई। मैं जानता हूँ कि विद्यार्थी जीवन मे इन्होने उर्दू नही पढी थी, बाद मे पढी हो तो नही, जानता ? इनकी ग़ज़लो मे उर्दू के शब्दो की भरमार है। मेरा मानना है कि ग़जलो, नज्मो मे उर्दू के शब्दो के प्रयोग के बिना वह मिठास और आनन्द नही आता जो आना चाहिए। इनकी ग़जलो मे उर्दू और हिन्दी के बहुत शब्दो का प्रयोग अच्छे ढग से किया गया है।

शायर ऐसे लोगो पर व्यग्य करता है जो मॉ बाप के जीवित रहते उनको पूछते नही, जीवन दुर्गति मे बीतता है, लेकिन उनके मर जाने पर वे बड़े शान शौकत से उनका श्राद्ध कार्य करते है। अधे कुँए मे वह कहता है -

मर गया एक बाप रोटी की तलब मे कल अभी
आज छप्पन भोग उसको श्राद्ध मे कैसे खिलाये

शायर को तकलीफ है मदिरो मे पत्थर के देवताओ पर घड़ो दूध चढाये जा

रहे है दूसरी तरफ गरीबो के बच्चे उसके लिए तरस रहे है - नास्तिक मे वह कहता है -

मेरे बच्चे दूध की इक बूँद को तरसा किये
और भर भर कर घडे अभिषेक वो करने लगे

शायर हिन्दू मुस्लिम एकता का हामी है । भुलावे मे पडकर लोगो के कदम बहक जाते हैं । अब पहले जैसा प्रेम भाव दिखाई नही पडता । इसानी अंदाज़ मे कहता है -

ईद और होली गले मिले पर पहले वाली बात कहॉ
उनकी पलक मे मेरे ऑसू ऐसे अब ज़ज़्बात कहॉ

आगे तो ठीक मे वह कहता है -

वो ही ईसा वो ही मूसा वो गुरु वो राम भी
हम समझते है मगर तू भी समझ पाये तो ठीक

बचा लीजिये मे वह कहता है -

राम रहमान जब एक ही हैं तो फिर
क्यूँ न दीवारे नफरत गिरा दीजिए

ख़ूँ बहा कर न दगो मे ज़ाया करे
हो सके तो वतन पर बहा दीजिए

दलितो की स्थिति के बारे मे शायर कहता है - दलित कौम हमेशा छली जाती रही जिनसे ऊपर उठाने की आशा रखते थे उन्होने ही उनके साथ छल किया । पास रहकर वह उन्हे नुकसान पहुँचाते रहे, उन्हे दुश्मन जानकर भी वे उनसे दूर नही

हो सके बल्कि अपने लोगो से ही लडते रहे। ढहते रहे मे वह कहता है -

आग से तो बच गये बनवास था
हर सदी मे फिर हमी तपते रहे
जिनसे उम्मीदे वफ़ा की थी वही
आस्तीन के सॉप बन डसते रहे

जानकर भी ज़हर सब पीते गये
और अपने आपसे लडते रहे
वो अकेला पॉव रखकर बढ गये
खण्डहरो की तरह हम ढहतेरहे

आज की राजनीतिक स्थिति पर भी शायर ने नजर डाली है। राजनीति मे अपराधीकरण बढ गया है। दल बदलना आम बात हो गयी है। भले लोग इसलिए राजनीति से कतरा रहे है और दुखी है। तलाश मे कहता है

अब लुटेरे करेगे रखवाली
रब है मालिक मेरी रियासत का
झूठ मक्कारी और दगा फितरत
दल बदल रग हैं सियासत का

लडते रहेगे मे भी नेताओ पर वह कहता है -

चुन चुन के खा गये सभी झीलो की मछलियॉ
बगुला भगत बने है जो उजले परो के लोग

सुब्हो शाम हो गये मे भी वह कहता है-

वो जिनको जेल मे होना था है वही साहिब
न्याय के घर तो गुनाहो के अब मुकाम हो गये

गॉवो मे जाति पॉति के आधार पर लोग बॅटे है -

शायर गॉवो मे भेद भाव के अॅधेरे से दुखी है। लोग बाते तो बसुधैव कुटुम्बकम की करते हैं पर गॉवो की सामाजिक स्थिति देखने पर यह सत्य नही ठहरता। गॉंव अंधेरे मे है मे वह कहता है -

कहने को प्रात मगर रात का अधेरा है
कैसे दुर्भाग्य का शिकार देश मेरा है
दायरे सिमटते ही जा रहे हैं अब हर पल
दावा बसुधैव का कुटुम्ब एक मेरा है।

कुल मिलाकर आइने बोलते हैं एक सफल कृति है। शायर ने अपने दुनियाबी अनुभवो को इसमे सफलता के साथ चित्रित किया है और अपने को सफल गज़लकार साबित किया है इसके लिए श्री रामदास अकेला को मै मुबारक़ देता हूँ और आगे अपनी कोशिश को जारी रखने की दुआयें देता हूँ।

माता प्रसाद
राज्यपाल

राजभवन, ईटानगर
अरुणाचल प्रदेश

कर्नल तिलकराज
चीफ पोस्टमास्टर जनरल
पंजाब सर्किल
चण्डीगढ़-160017

प्रिय श्री अकेला जी,

आपका पत्र मिला, साथ मे मिली 'आइने बोलते हैं' की हस्तलिखित प्रति । आइने बोलते नही चुप रहते हैं तथा हमे अपनी ही परछाई दिखाते है। पर आपके आइने बोलते हैं। हर ग़ज़ल, हर शेअर, हर अक्षर, बोल-बोल कर जिन्दगी की सच्चाईयॉ बता रहा है। आपने अतीत व वर्तमान के प्रत्येक क्षण की कटुता एव मिठास को बडी शिद्दत से अनुभव किया है तथा ग़ज़लो मे ढालने का प्रयास किया है धारदार ढग से अभिव्यक्ति की है। चमत्कारिक ताम-झाम मे नही उलझे।

ग़ज़ले रुमानी ससार से पाठको को साक्षात्कार नही करवाती बल्कि सीधे जीवन के कटु यथार्थ के प्रमाणिक चित्र बनाती है। घटनाओ से अभिभूत होकर शुरु होती है, पर वे उस घटना विशेष पर टिप्पणी बनने की बजाय उनके मूल मे बसी जटिलताओ का खुलासा करती है। आदेश स्वर मे नही, अनुभूति और सवेदना के स्वर मे नेताओ के थोथेपन पर व्यग्य करती है :-

ससद से सडको तक केवल रस्म निभाते फिरते है
हाल हमारा पूछे इतने फ़ुर्सत के लम्हात कहाँ।

जीवन मे जो तरलता, हरीतिमा, राजनीतिक कुचक्रो के बाद अभी भी शेष है उसे सुरक्षित रखने के लिए आप अत्यत व्यग्र है। आपकी यही व्यग्रता, आपको परिप्रेक्ष्य मे मानवीय हित की चिंता से जोड देती है आप मानवता का कल्याण समष्टि के हित मे अर्पित करने मे मानते है

जहाँ पसीना गिरे आपका
वहाँ हमारा लहू बहे ।

आप परिवेश से जुडे प्रतिबद्ध रचनाकार है। कभी सोने की चिडिया कहा जाने वाला देश किस साज़िश के तहत एक कत्लगाह मे बदल गया है। इसकी रचनाकार को गहरी समझ है। यह पीडा कई गज़लो मे व्यक्त है

प्यास ख़ूँ की, भूख दौलत की, अजब इन्सॉं मे है
झूठ बेरहमी तो ऐसी भी कहाँ शैता मे है ।

ग़ज़लो मे अलग से दिखाई देने वाली विशेषता यह है कि इस युग की त्रासदी के प्रति आपकी दृष्टि एकदमं रचनात्मक है और आपकी निगाह उन कारणो को भी पड़तालने मे सक्षम हुई है जो इसके लिए असल मे उत्तरदायी है

अब सलामत झोपडी कोई भला कैसे रहे
जब ख़याली ही महल तामीर हर अरमॉं मे है

हर तरफ नफ़रत की ऑंधी उड रही है तथा सारा वातावरण दूषित हो गया है

जाने कैसी हवा का असर है,
सहमा- सहमा हुआ हर बशर है।

आज राज्य अँथा कुआँ हो गया है जिसमे इन्सान गिरता ही जाता है। कोई एक दूसरे को सम्भालने वाला नही है

हम को पता है आपकी सारी सियासते,
अंधा कुआँ है इसमे हमे मत गिराइये।

लोग चमचागीरी करके गले मे फूलो की माला डाल कर कॉटो मे उलझा देते है

फूलो की माला पहना कर
कॉटो में उलझाए लोग

ससद की कुर्सी पर बैठा हर नेता अगर पत्थर की मूर्ति है तो न्याय कैसा ? उससे किसी ग़रीब की भलाई की उम्मीद कैसी ।

मूरत है पत्थर की अकेला ससद की अब हर कुर्सी ।

ऐसे हालातो मे रचनाकार पत्थर की हर मूर्ति से जवाब मॉगता है

मजदूर पूछता है अकेला जवाब दो,
सचमुच है कौन मुल्क़ का हकदार दोस्तो !

ग़ज़लो को शोषित आदमी के पक्ष मे खडा किया है यह इनकी मुख्य विशेषता है । आम आदमी आपकी ग़जलो मे एकदम सहज रुप से आया है । अमीरो की शोषण करने की प्रवृत्ति को सुन्दरता से उतारा है

महलो मे रहने वाले भूखे है कितने
मेरे कुछ टुकडो पर घात लगाये है ।

संकेतो से दिल दहला देने वाले हादसो को मूर्त करने की कला मे शायर निपुण है

परसो डोली उठी कल जनाज़ा
ज़िन्दगी किस क़दर मुख्तसर है ।

देश के हालात आज भी खराब है । आज भी पक्षपात की खातिर गुरु ही

चेले के अग काट-काट कर फेक रहा है

लाठियॉ जिसकी उसी की भैस थी हर दौर मे
द्रोण के हाथो अॅगूठे भील के कटने लगे ।

अक्ल तथा प्रतिभा को नष्ट करने के अनेको तरीके है एक द्रोणाचार्य की तो बात ही नहीं, राम का नाम लेकर सारा ससार रावण बन गया है । सभी रावण नजर आने लगे है

मर्यादा की बात करेगे किस मुँह से फिर जग वाले,
राम का नाम ही लेकर सारा जग जब रावण हो जाए

गरीब मजदूर के दुखो का अहसास करने के लिए कहा है

आँखो के खारे पानी मे डूबो और नहाना सीखो,
गगा का पावन जल शायद और भी पावन हो जाये ।

नफ़रत की आग न फैलाओ । मिलजुल कर रहने का सदेश दिया है -

नाग नफरत का अभी भी यार मर जाए तो ठीक,
इक किरण घर मे उजाला अब भी कर जाये तो ठीक

धार्मिक उन्माद को ख़त्म करने के लिए शायर कहता है

वो ही ईसा, वो ही मूसा वो गुरु वो राम भी,
हम समझते है मगर तू भी समझ पाये तो ठीक
गर जलानी है होली अभी आइये
नफरतो के इरादे जला दीजिए ।

आप प्यार से रहना चाहते हैं और यह गलती बार बार करेंगे

ये ही खता करेंगे हर इक बार दोस्तो
करते रहेंगे प्यार से हम प्यार दोस्तो ।

गजलो मे आम आदमी की सवेदनाओ को बहुत ही मार्मिक ढग से बयान किया गया है। ये स्मृति मे टिकती हैं तथा देर तक अपना असर छोडती है। शब्द-चयन बढिया है तथा किफायत से काम लिया गया है। ग़ज़ल का जीवन की विसंगतियो से लडने वाली काव्य विधा के रुप मे वरण किया है और ग़जलकार ने जीवन की वास्तविकताओ को कही भी अकेला नहीं छोडा।

आपका शुभचिन्तक
तिलक राज

संदेश

श्री राम दास अकेला से मेरा परिचय बहुत पुराना है अभी तक मै उन्हे डाक विभाग के एक डाक अधिकारी के रुप मे जानता था, किन्तु वह एक भावुक-मना गीतकार-गजलकार भी है, इसकी जानकारी मुझे उनकी 'आइने बोलते हैं' काव्य सग्रह की पाण्डु-लिपि पढने के पश्चात ही हुई और तभी अकेला उपनाम की सार्थकता समक्ष मे आयी।

'आइने बोलते हैं' कृति मे उन्होने समाज मे व्याप्त अव्यवस्था और विषमता पर चोट की है तथा जीवन की अनेक विद्रूपताओ को भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। यह कृति उनकी रचना-शीलता का वास्तविक आइना है।

निस्सदेह वह प्रशसा के पात्र हैं कि उन्होने डाक विभाग के व्यस्तम वातावरण मे रहने के बावजूद सरस गीत-ग़ज़लो का सृजन किया है। मुझे विश्वास है कि उनकी यह कृति सुहृद पाठको को अवश्य आनन्दित करेगी।

लखनऊ - 226001
31 मार्च 1999

(शारदा प्रसाद ओझा)
चीफ पोस्टमास्टर जनरल
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

ताकि सनद रहे -

आइने बोलते है आपके हाथ मे है यह तसव्वुर मेरे लिए कितना सुखद है, इसका एहसास सिर्फ मुझे ही हो सकता है।

जब जब अपनी बात लिखने बैठा तो यह तय करना मेरे लिए कठिन था कि मै अपनी बात कहाँ से शुरु करूँ? मुझे एहसास ही नहीं कि कब और कैसे इस एहसास की दुनियाँ मे आ गया। जिस दिन मैने अपना पहला दर्द महसूस किया उसी दिन मेरी शायरी मे मेरी पीड़ा गुनगुना उठी। तब भी मै यह महसूस नही कर सका कि मुझमे शायरी के अकुर फूट रहे है और आज भी उस अकुर के प्रस्फुटित होने की प्रतीक्षा में हूँ। मै शायर या कवि नहीं। मै कोई चिन्तक या मनीषी भी नही परन्तु यह सब कैसे लिख गया, मै स्वय नही जानता अदृश्य ने शायद मुझ जैसे छोटे आदमी को इस बडे काम के लिए चुना हो। यह तो वही जाने ।

आपके इस नाचीज ने अपने जीवन की कुछ अमिट यादो कुछ दबी हुई चीखो, कुछ भूले बिसरे सपनो को ज़िन्दगी के कोरे कागज पर स्याही के माध्यम से एक धुधला सा नक्श बनाने का प्रयास किया है।

आइने बोलते है मे मेरा पूरा समाज है, परिवेश है और मैं हूँ। समाज और परिवेश तथा मै के बीच जो संबध है वही हाजिर कररहा हूँ।

मेरे लिए यह कहना मुश्किल है कि इस संकलन का मूल प्रेरणा श्रोत क्या है। हॉ मै स्वय अपने अन्दर के इसान से अवश्य डरा डरा सा रहता हूँ, शायद उसने ही मुझे कुरेदकर आप तक पहुँचने के लिए बाध्य किया है।

मैं जीवन पर्यन्त उन लम्हो का कृतज्ञ रहूँगा जिन्होंने मुझे लिखने के लिए उचित वातावरण दिया। मैं उस समाज का भी कृतज्ञ हूँ जिसने मुझे खुद को महसूस कराने मे हर पल साथ दिया -

मुझसे इबरत हासिल करने आयें लोग
इसीलिए मैं रोज़ ये लग्ज़िश करता हूँ।

शेष आइने बोलते हैं -

-रामदास अकेला

आभार :-

वो जो कुन्दन हैं मेरी नज़रो मे -

महामहिम माता प्रसाद जी, राज्यपाल अरुणाचल प्रदेश,
कर्नल तिलकराज चीफ पोस्टमास्टर जनरल पजाब सर्किल
इज्जतमआब शमशुर्रहमान फारुकी साहब, पूर्व मेबर पोस्टल सर्विसेज बोर्ड (सरस्वती सम्मान प्राप्त)

अपने बड़ों मे -

श्री नासिर हुसेन जैदी, प हरीराम द्विवेदी, प प्रेम शकर चौबे, प श्री कृष्ण तिवारी, श्री बृज मोहन श्रीवास्तव चचल स्वर्गीय हक़ीम बनारसी, श्रीपाल सिह क्षेम आदि जिन्होने मुझे एक हौसला दिया ।

दोस्तो में -

भाई अज़ीज ग़ाजीपुर, हरिनारायण हरीश, रईस शहीदी, दानिश, अमानत बनारसी, जवाहर लाल जलज, कद्र पारवी, हफीज़ बलियावी, गणेश गभीर और अलकबीर आदि जिन्होने मुझे भरपुर प्यार दिया ।

वो जिनकी नज़रों ने कुन्दन बना दिया मुझको -

बडे भाई भोला नाथ गहमरी (प्रख्यात भोजपुरी कवि) और भाई डा कलीम कैसर बलरामपुरी - जिनके नेक मशविरे ने इस नाचीज़ को 'आइने बोलते हैं' का ख़ूबसूरत एहसास दिया और इसका तकनीकी मार्ग प्रशस्त कराने मे हर पल मुझे हौसला देते रहे ।

।मनायें मेरे साथ रही -

ोपक पी॰एम॰जी लखनऊ
ार प्रसाद पी॰एम॰जी गोरखपुर एव इलाहाबाद
निदेशक डाक सेवाए, इलाहाबाद

[-

च्पनाओ को यथार्थ मे तब्दील करने का एहसास और साहस जगाते रहे।

ुभचिन्तकों के नाम -

ापनी बेपनाह मोहब्बतों का वरदान दिया जो मुझसे कभी कभी ज़िद
.र सोचने के लिए हौसला देते रहे और जगाते रहे अपनी चाहतो का

रामदास अकेला

07

ग़ज़लें

एक

याद भी उसकी, ख़ुशबू दे
दान मुझे ये रब तू दे

हर मज़र रोने वाला है
इन आँखो मे आँसू दे

ये मुझको रुसवा कर देगी
इच्छाओ पर काबू दे

ग़म की राते चमकाने को
पलको पर कुछ जुगनू दे

फ़सल लहूँ से सीची थी जब
क्यों न ये धरती बालू दे

मैं तुझ को क्या दे सकता हूँ
जो भी देना है तू दे

जब जब पुरवा बहे अकेला
ज़ख़्म हमारा ख़ुशबू दे।

दो

जाने कैसी हवा का असर है,
सहमा - सहमा हुआ हर बशर है ।

रोशनी को तरसती हैं आँखे ,
किस तरह मै कहूँ ये सहर है ।

क्या तिजोरी मे है कौन जाने ,
बन्द ताले पे सबकी नजर हैं ।

है पड़ोसी ने मुझको बुलाया,
एक उड़ती हुई ये ख़बर है ।

देख कर क़ातिलाना अदाये,
कह दूँ कैसे कि वो मोतबर है।

उसने अमृत कहा पी गये हम,
जब कि मालूम था ये ज़हर है ।

आये ठडी हवा फिर कहॉ से,
जब कि शोलो पे हर गॉव -घर है ।

परसों डोली उठी कल जनाज़ा,
ज़िन्दगी किस क़दर मुख़्तसर है ।

चढ़ गई धूप कब की मुडेरे,
सो रहा तू अभी बेख़बर है ।

क़ाफिले चल रहे हैं अकेला ,
ख़त्म होता नही ये सफ़र है ।

तीन

ये दुनियॉ के रगी नज़ारो मे चल के,
लुटा आये सब कुछ बहारों मे चल के।

उम्मीदे वफ़ा बस उन्ही से है क़ायम,
झुलसते नही जो शरारो मे चल के।

गुमां ही नही था कि रहबर हमारा,
बदल जायेगा ताज़दारो मे चल के।

ज़मीं तो ज़मी आसमॉ देख आये,
सुकूँ बस मिला खाकसारो में चल के।

ख़ुद अपनी निग़ाहो मे कातिल रहे हम,
भले बच के आये हज़ारो मे चल के।

अब आओ ज़रा कुछ तसल्ली दें उनको ,
जो बचपन लुटा आये ख़ारों में चल के।

ग़ुलों से तो छिलने लगे पॉव शायद,
सुकू कुछ मिले रेगज़ारों मे चल के।

ख़ुदा उनकी राहों का हाफिज अकेला,
जो आये अभी चॉद - तारो मे चल के।

चार



ज़िन्दगी की बस इतनी कहानी रही,
ये भिखारन कभी राजरानी रही ।

वो कब आई मुझे क्या ख़बर क्या पता,
ग़ुमशुदा मेरा बचपन जवानी रही ।

काम आयेगे जिनके लिए बिक गये,
ये हकीक़त नही बदग़ुमानी रही ।

दुनियाँदारी मे मशगूल ऐसे रहे,
सोच पाये न क्या ज़िन्दगानी रही ।

ले गई हर बहाने से अपनी तरफ़,
किस क़दर मौत मेरी सयानी रही।

कुछ लुटेरे घरो मे तभी आ घुसे,
दूर नज़रो से जब सावधानी रही।

पापसे ही हमारे ये मैली हुई,
अन्यथा कब ये चादर पुरानी रही।

ऑसुओ की रियासत तो अब हो गई,
ऑख सपनो की कल राजधानी रही।

सर अकेला का रहता सलामत भी क्यूँ,
जब बबूलो की ही सायबानी रही।

पाँच

दरपन मे जब आये लोग,
ख़ुद से बहुत शरमाये लोग।

पापो के कुछ भरे घड़ो से,
गगा को नहलाये लोग।

छीन झपट के ग़ैर के तन से
अपना कफ़न जुटाये लोग।

अपनी काली करतूतो से,
दिन को रात बनाये लोग।

पाप करे ख़ुद लेकिन उँगली,
मेरी ओर उठाये लोग ।

साये भी जब लगे डराने,
कहाँ भाग कर जायें लोग ।

फूलो की माला पहना कर
काँटों में उलझाये लोग ।

नीद उड़ गई आँखो से अब,
सपने कहाँ सजाये लोग ।

मंजिल तो है दूर अकेला,
राह मे थक ना जायें लोग ।

छः

जाग चुके है फिर भी कुछ अलसाये है,
देख उन्हें सारे मज़र मुस्काये हैं।

कभी जिये, मर गये कभी, फिर जी बैठे,
युगो - युगो से हमको ज़ह्र पिलाये है।

आये थे एक उम्र लिये जीने को,
मग़र हादसो से कब बच पाये है। ।

स्वर्ग और उद्धार मोक्ष की चाह नही,
मुश्किल से हम बधन तोड़ के आये हैं ।

महलों मे रहने वाले भूखे हैं कितने,
मेरे कुछ टुकड़ो पर घात लगाये हैं ।

अगारो के पार बड़ी शीतलता है,
पार वही होते जो क़दम बढ़ाये है ।

मैंने अकेला अक्सर यह महसूस किया,
जहॉ है जीवन वही मौत के साये हैं ।

सात

मेरा मशवरा है जो है भोले - भाले,
कोई उनकी बाहो मे बाहे न डाले ।

कुबूल इसको कर ले या बातो मे टाले,
ये उसकी हक़ीक़त है उसके हवाले ।

तू क्यो आखिरश मौत से डर रहा है,
तुझे ज़िन्दगी ही न अब मार डाले ।

वही सबसे आगे है हैवानियत मे,
समझते हो तुम जिनको तहज़ीब वाले ।

कुछ और अब हमे देखने की है हसरत,
बहुत देखे अब तक अँधेरे उजाले ।

बहुत कर चुके बन्दगी बेख़ुदी मे,
ज़रा होश में आये मदहोश वाले ।

तुझे होश आ जायेगा ख़ुद अकेला,
फ़रेबे मोहब्बत ज़रा और खा लें ।

आठ

ज़ालिमो से भी मेरे यार मोहब्बत रखना,
जुल्म के सामने रखना तो बग़ावत रखना।

पाक दिल पाक मोहब्बत सी इबादत रखना,
चल के हर राह पे बस याद क़यामत रखना।

मेरे मरने की दो आ उसके बिना नामुमकिन,
मेरे दुश्मन को ऐ अल्लाह सलामत रखना।

है अभी वक्त कि तुम तर्क़े इरादा कर लो,
अपने होठो पे न तुम झूठी सी चाहत रखना।

जा रहे हो किसी मजलूम को राहत लेकर,
अपनी नीयत की बहरहाल ज़मानत रखना।

ख़ूँ शहीदो ने दिये अपने वतन की ख़ातिर,
हर घड़ी नज़रो मे बस उनकी शहादत रखना।

हर कोई यूँ तो अकेला है मुसाफिर हैं सभी,
दो क़दम साथ रहे लोग वो चाहत रखना।

नौं

जो न सुन पाये कभी अपने दिलो की ही सदाये,
हम उन्हे इस ज़िन्दगी का फलसफ़ा कैसे सुनाये ।

सोम को पूरब दिशा मे घर किसी का जल उठा,
सोचते हैं आग हम दिग्शूल मे कैसे बुझाये ।

लोग तो जगल की लकड़ी की तिजारत मे रहे,
और हम पीपल के सूखे पेड़ को बस जल चढ़ाये

मर गया एक बाप रोटी की तलब मे कल अभी,
आज छप्पन भोग उसको श्राद्ध मे कैसे खिलाये।

बेबसी भी साचेती है रास्तो को देख कर,
घूमते है नाग काले किस तरह उनको हटाये।

ऑसुओ के दर्द से है जब नही रिश्ता कोई,
किसलिए हम पत्थरो को देवता अपना बनाये।

वो उलझ कर रह गया है आस्था के जाल मे,
आइये अधे कुएँ से हम   अकेला को बचाये।

दस

हम क़रीब उनके इतना भी जायें क्यूँ,
दूरी थोड़ी बनी रहे टकराये क्यूँ।

शाश्वत शब्द बदलते केवल अर्थ रहे,
अर्थों की ख़ातिर ही शब्द रचायें क्यूँ।

हर चिराग़ के अपने अलग उजाले हैं,
एक जलाये, दूजा दिया बुझाये क्यूँ।

मुँह मे राम बगल मे छूरी है जिनके,
ऐसे बेरहमो को गले लगाये क्यूँ।

कह दो उनसे जो उपदेश दिया करते,
पेड़ो से बबूल के, आम खिलाये क्यूँ।

उसे मिला या मिला आप को थोड़ा सा,
टुकड़ो की ख़ातिर तलवार उठाये क्यूँ।

मैंने अकेला रस्ता अलग बनाया है,
मंज़िल मेरी वो दिखलाने आये क्यूँ।

इग्यारह

अंध विश्वासों से जब परहेज़ हम करने लगे,
सरफिरे जो भी थे हमको नास्तिक कहने लगे।

ये ख़ुदा या गाड, ईश्वर नाम हैं उसके सभी,
लोग फ़िरकों में उसे तकसीम क्यों करने लगे।

इस तरह सूरत मेरी बदली मेरे हालात ने ,
अपनी सूरत आइने मे देख कर डरने लगे ।

मेरे बच्चे दूध की इक बूद को तरसा किए,
और भर-भर कर घड़े अभिषेक वो करने लगे ।

लाठियॉ जिसकी उसी की भैंस थी हर दौर में,
द्रोण के हाथो ॲगूठे भील के कटने लगे ।

हर घड़ी लिक्खी गई ज़ुल्मो सितम की दास्तॉ,
इन किताबो पर तो ऑसू ऑख से झरने लगे ।

चल अकेला हम चले एक आदमी का साथ दे,
भेड़िये शहरों मे सब रहबर का दम भरने लगे ।

बारह

रो के करने लगा यूँ गिला आइना,
टूट कर जब भी खुद से मिला आइना।

अलविदा कह गया हाथ हिलाते हुए,
राह मे जब भी कोई मिला आइना।

जब भी नज़रे मिली याद आने लगा,
गुजरे लम्हो का था सिलसिला आइना ।

सारे शिकवे गिले रक्स करने लगे,
एक दिन काँप कर जब मिला आइना ।

फिर ग़मो की कहानी वो कहने लगा,
मेरे हम राह जब भी चला आइना ।

बाग मे जब भी कलियों से भँवरा मिला,
गुनगुनाने लगा खुश हुआ आइना ।

एक चेहरे से चेहरे कई बन गये ,
टूट कर जब अकेला गिरा आइना ।

तेरह

ईद औ होली गले मिले पर पहले वाली बात कहाँ,
तेरी पलक मे मेरे आँसू ऐसे अब जज़्बात कहाँ।

बहके क़दम दहकते शोले मंज़िल से भटके हैं लोग,
बेहोशी के आलम मे अब मिल्लत के नग्मात कहाँ।

कितने राम अभी जगल मे भूखे-प्यासे फिरते है,
लेकिन पत्थर-दिल लोगो मे उनकी आज बिसात कहॉ

ससद से सड़को तक केवल रस्म निभाते फिरते है
हाल हमारा पूछे इतने फ़ुर्सत के लम्हात कहॉ ।

अब्रे करम की चाह न कर हर ओर बमो की बारिश है,
चॉद जवॉ छत पर आ पाये ऐसी कोई रात कहॉं ।

जहॉ पसीना गिरे आप का वहॉ हमारा लहू बहे,
बस कहने की बात रही ये दिल मे है जज्बात कहॉ ।

आओं हम भी गले मिले कुछ इन्सानी अन्दाज़ो मे,
मै गर रहा अकेला तो फिर बन पायेगी बात कहॉ ।

चौदह

चारो ओर घना अँधियारा पाओगे,
कहॉ - कहॉ तुम दिये जलाने जाओगे ।

दहक रही है आग दिलो में नफ़रत की,
राग बसत बहार कहॉ तुम गाओगे ।

कोई नही किसी की सुनने वाला है,
खुद अपनी आवाज़ तुम्ही सुन पाओगे ।

छाया जंगल राज आज हर जानिब है,
जाओगे तुम जिधर वही घिर जाओगे ।

एक दिया हर कोई अलग जलाये है,
कहो अँधेरा कैसे दूर भगाओगे ।

धवल किरन लेकर उजियारा आयेगा,
एक साथ जब सारे दियेजलाओगे ।

साथ कोई जाने का नाम नही लेता,
पूछ रहे सब कहाँ अकेला जाओगे ।

पन्द्रह

प्यास खूँ की भूख, दौलत की अजब इन्सॉ में है,
झूठ बेरहमी तो ऐसी भी कहाँ शैता मे है ।

अब सलामत झोपड़ी कोई भला कैसे रहे,
जब ख़याली ही महल तामीर हर अरमॉ मे है ।

कौन सी उम्मीद पे जी पाये कलियो का चमन,
जब कि रितु पतझड़ की और कांटा हर इक दामॉ मे है ।

बेरहम मॉझी लिये पतवार फिरते देश की,
डगमगाती नाव कब से गर्दिशे तूफॉ मे है ।

किस तरह विश्वास वादों का करे अब आदमी,
आज तक तो खोट ही पाया गया ईमॉ मे है ।

गर बचानी हैं दिशायें हर कोई यह जान ले,
हो कही भी कोई लेकिन जंग के मैदॉ मे है ।

साथ कोई कब चला है जानिबे मंजिल यहॉ,
तू अकेला ही चला चल जान जब तक जॉ मे है ।



पोलह

नाग नफ़रत का अभी भी यार मर जाये तो ठीक,
इक किरन घर में उजाला अब भी कर जाये तो ठीक।

चढ़ रहा है जहर इक नस-नस मे अपने देश के,
मार दो मतर अभी ही ये उतर जाये तो ठीक ।

कश्तियाँ डूबी हज़ारो घिर के तूफ़ानो के बीच,
सामने ही है मगर साहिल नज़र आये तो ठीक ।

वो ही ईसा वो ही मूसा वो गुरु वो राम भी,
हम समझते है मगर तू भी समझ पाये तो ठीक।

हादसे गुज़रे अभी जो कर गये है चाकदिल ,
मिल के हम मरहम लगायें घाव भर जाये तो ठीक।

आदमी की साँस का ठेका लिये फिरते है लोग,
हर कोई अब मौत अपनी खुद जो मर जाये तो ठीक।

चाहता है वो अकेला ले ले दुनियाँ हाथ में,
है यहाँ आलम कि सबका पेट भर जाये तो ठीक ।

सत्रह

थमने दो तूफ़ान जरा मौसम मन भावन हो जाये,
दे दो इतना ख़ून-पसीना मात ये सावन हो जाये।

आखो के ख़ारे पानी मे डूबो और नहाना सीखो,
गगा का पावन जल शायद और भी पावन हो जाये

मर्यादा की बात करेगे किस मुँह से फिर जग वाले,
राम का नाम ही लेकर सारा जग जब रावन हो जाये।

पानी पवन देह और मन सब अभी अपावन कर बैठे,
चलता रहा यही क्रम तो फिर ईश अपावन हो जाये।

मूरत है पत्थर की अकेला ससद की अब हर कुर्सी,
मैं तो सच कहता हूँ चाहे पाँव मे बन्धन हो जाये।

अट्ठारह

जो हो सके तो कुछ दिये यहीं जलाइये,
है आग लग रही अभी वहाँ न जाइये ।

बेघर भटक रहे हैं बहुत गाँव-शहर में,
जो हो सके तो उनके लिये घर बनाइये ।

हर शै मे है बसा वो हर इक को अज़ीज़ है,
सोने का महल उसके लिए क्यो बनाइये ।

है आस्था वो तेरी मगर धर्म ये तेरा
उसके लिऐ हमारी न बस्ती जलाइये ।

हमको पता है आप की सारी सियासते,
अधा कुआँ है इसमे हमे मत गिराइये ।

मै तो यॅु ही अकेला चला जाऊॅगा कहीं,
अच्छा यही है आप हमें मत बुलाइये ।

उन्नीस

मैं भी हूँ बज़्म मे ये बता दीजिए
जामे उल्फत मुझे भी पिला दीजिये ।

राम रहमान जब एक ही है तो फिर,
क्यूँ न दीवारे नफ़रत गिरा दीजिए

दूर रहना हमारा खलेगा बहुत,
फ़ासला दिल से पहले मिटा दीजिए

हर तरफ आग भड़केगी फ़िर शहर में,
अपने दामन से यूँ ना हवा दीजिये ।

खूँ बहा कर न दगों मे जाया करे,
हो सके तो वतन पर बहा दीजिए ।

गर जलानी है होली अभी आइये,
नफ़रतो के इरादे जला दीजिये ।

क्यो है मज़िल अलग और सफ़र भी अलग
राज सबको अकेला बता दीजिए

बीस

ले के जाना था कब और कब ले गया,
अपनी पूँजी उठा कर, वो सब ले गया ।

दोस्त तो दोस्त दुश्मन भी हैराँ रहे,
बाप बेटे को काँधे पे, जब ले गया ।

हर खुशी कहकहे मन्द मुस्कान भी,
साथ अपने वो ऐशो तरब ले गया ।

जाने कब की धरोहर थी उसकी यहाँ,
बे तकाजा उठा कर, वो सब ले गया ।

चाह थी भोर की एक किरन देख ले,
मुँह अँधेरे ही आकर, वो सब ले गया

मैं अकेला था फिर भी सफर ठीक था,
बन के रहबर वो सब, बे सबब ले गया ।

इक्कीस

ऑधियो के बीच हम चलते रहे,
इक नया इतिहास यूँ रचते रहे ।

ना ख़ुदाओ का भरोसा कर लिया,
उम्र भर पानी मे हम बहते रहे ।

वास्ता देते रहे अज़दाद का,
और हमारी नस्ल को छलते रहे।

आग से तो बच गये बनबास था,
हर सदी मे फिर हमीं तपते रहे

जिनसे उम्मीदे वफा की थी वही,
आस्ती के साँप थे डँसते रहे।

जान कर भी जहर सब पीते गये,
और अपने आप से लड़ते रहे।

वो अकेला पाँव रख कर बढ़ गये,
खडहरो की तरह हम ढहते रहे।

[redacted]

बाइस

जरा हमें भी अँधेरो की बात कहने दो,
उजाले उनकी ही हद में जो हैं तो रहने दो।

अँधेरे ही तो उजालो को जन्म देते है,
ये सच नहीं है भरम है भरम ही रहने दो।

बहुत गुमान है सूरज को अपने होने का,
है शब को शब का जो एहसास उसको रहने दो ।

मैं चाहता हूँ उजाले बिखेरना हर सूँ ,
जमाने वालो के जो जी मे आये कहने दो ।

अदालतो के ही हद में न्याय मिलता है,
हमारा उनका मुक़दमा है उसको चलने दो ।

दिया है मुझको जो सूरज ने मेरे हिस्से में
उस इक किरन को अकेला के साथ रहने दो ।

तेइस

ये ही ख़ता करेंगे हर इक बार दोस्तो,
करते रहेंगे प्यार से हम प्यार दोस्तो ।

ऐशो तरब के लालची सौदागरों के हाथ,
मारा गया ग़रीब ही हर बार दोस्तो ।

बदले मे रोटियो के हमे नफ़रतें मिली,
हम इस क़दर न थे कभी लाचार दोस्तो।

हुस्ने अज़ीम जिस जगह नीलाम हो गया,
शायद वही है मिस्र का बाज़ार दोस्तो।

कश्ती हमारी निकलेगी तूफ़ॉं से किस तरह
अधो के हाथ लग गई पतवार दोस्तो ।

मज़दूर पूछता है अकेला जबाब दो,
सचमुच है कौन मुल्क़ का हक़दार दोस्तो।



ौबीस

भूल जा गुजरा जो कल था, इक तमाशा काल का,
आ चले स्वागत करे हम फ़िर नया इक साल का।

छोड़िये कितने मरे मारे गये कब् क्यूँ कहाँ,
रास आये मौसमें गुल आप को इस साल का।

मंच पर पगड़ी उछालें क्यो किसी इन्सान की,
काम कवियो का नहीं ये है किसी वाचाल का ।

जोड़िये बस जोड़िये एक ईट मत सरकाइये,
मुश्किलो से घर बसा है शेख प्यारे लाल का ।

क्यो करें अफ़सुर्दा साले नौ को ऐ अहले वतन,
मसअला छेड़ें न हम बेवजहा रोटी दाल का ।

अब सदी इक्कीसवीं आवाज़ देती है हमे,
काटिए अब तार तेरहवी सदी के जाल का ।

नूर बन कर एक किरन फूटे सभी की राह मे,
दे अकेला यूँ मुबारक़बाद अगले साल का ।

च्चीस

आप रहे ज़िन्दगी के पास,
और मैं रहा खड़ा उदास।

भेड़िये को देख जाल में,
मेमने हुए हैं   बदहवास।

फेर कर नज़र वो चल दिये,
खेल ख़त्म पैसे जब ख़लास।

था भरा तो पी गए सभी,
ख़ाली रह गया वही गिलास।

सिर्फ आदमी की ख़ोज मे,
हो गए बिफल मेरे प्रयास।

आवरन हटा तो यूँ लगा,
ये दिशाये ही रही लिबास।

महफ़िले थी जब तलक थे लोग,
आज है अकेला रामदास।

छब्बीस

किसी को मंदिरो - मस्जिद से काम लेना है,
हमे तो ज़ुल्म से बस इन्तक़ाम लेना है ।

वतन परस्ती का दावा जो है वतन वालो,
वतन परस्तो को मेहनत से काम लेना है ।

वतन मे अहले वतन को भी कुछ मोहब्बत का,
पयाम लेना है, मुझको पयाम देना है ।

बिछड न पाये कोई अपना आज अपनो से,
जो गिर रहा है उसे बढ़ के थाम लेना है ।

हमारे सब्र ने दी है हमे ये खुशख़बरी ,
मयारे जुल्म को अब तो विराम लेना है ।

वो पैतरे जो बदलते है तो बदलते रहे ,
हमे तो प्यार से उल्फत से काम लेना है ।

सितम जो टूट रहे है कदम - क़दम हम पर,
हमे तो सिर्फ मोहब्बत से काम लेना है ।

चलो अकेला बता दे चमन मे ये सबको
गुलों से ही नहीं खारो से काम लेना है ।

सत्ताइस

किस मे ज़ज़्बा है अब शहादत का,
हर तरफ़ दौर है क़यामत का।

था ज़माना कभी शराफ़त का,
दौरे हाज़िर है बस बग़ावत का।

अब लुटेरे करेगे रखवाली,
रब है मालिक मेरी रियासत का ।

है जो सदियो से बन्द गलियो मे,
मुन्तजिर है वही शरीयत का ।

झूठ मक्क़ारी और दग़ा फित्तरत,
दल बदल रग है सियासत का ।

जिनके ज़ेह्नो मे है गुबार भरा,
रग चेहरे पे है शराफ़त का ।

चल अकेला करे तलाश कहीं,
रह गुज़र अब कोई सदाक़त का ।

अट्ठाइस

दिया जला के जहाँ दोपहर में रक्खा था,
मेरा वजूद उसी रह गुज़र मे रक्खा था ।

ये ज़िन्दगी तो है गुज़री तलाश मे उसकी,
सुकूने दिल उसी बेबस नज़र मे रक्खा था ।

फ़क़ीर था न वो साधू न धर्मो मज़हब था,
कबीर का जो जनाज़ा अधर मे रक्खा था ।

वो सो गया तो जगाये कभी न जागेगा,
कि हमने अपना मुक़द्दर सफर मे रक्खा था ।

सफ़ीना डूब रहा था हमारा साहिल पर,
मेरा नसीब ही पानी के घर मे रक्खा था ।

जहाँ पे होठ रखा था मेरी तमन्ना ने ,
खुशी का अश्क वही चश्मेतर मे रक्खा था ।

वो रामदास परिन्दा भी उड़ गया आख़िर,
बड़े जतन से जो मिट्टी के घर मे रक्खा था ।

अकेला जब कि अकेला नही था फिर कैसे,
निकल गया वो असासा जो घर मे रक्खा था ।

उन्तीस

दिन को मेरे वो काली रात करे,
और हम ज़िक्र वाक़्यात करे।

सारे मुफ़लिस को एक साथ करे ,
आओ कुछ ऐसी वारदात करे।

वो शपथ ले रहे हैं इंगलिश में,
कैसे हिन्दी ज़ुबॉ में बात करे।

भेजिये उनको चुन के ससद मे,
बात कम जम के जूता - लात करे।

मजहबी ज़हर बोने वालों से,
शीशा- ओ संग ही की बात करे।

वो जो आसानियाँ तलाश रहे,
उनको भी पेश मुश्किलात करे।

उनसे मिलना फुज़ूल है शायद,
अब तो बस खुद से खुद की बात करे।

बाद मुद्दत के मिल रहे है हम,
आओ बस प्यार ही की बात करे।

दोस्त ऐसे मिले अकेला को,
साथ रहते हुए भी घात करे।

[redacted]

तीस

वो आग लगाते रहे मज़हब की हवा से,
रोशन करेंगे हम तो वतन शम्मे वफ़ा से।

आजादिये वतन के शहीदों को भुला कर,
क्या बच सकोगे दोस्तो सैलाबे बला से।

सेहरा है नेक़ नामी का अब भी उन्हीं के सर,
जो लोग है इन्सानियत के ख़ून के प्या-से ।

जो बेचते हैं आबरुये मादरे वतन,
कैसे मिला सकेगे नज़र कल वो खुदा से ।

कुछ मुल्क़ फ़रोशो के सिवा आम आदमी,
लड़ता रहा वतन की हिफ़ाजत में सदा से ।

अब ज़ुल्म के आगे न कभी सर ये झुकेगा,
ये मत्र अकेला को मिला मॉ की दुआ से ।

इकतीस

ऐ अहले वतन फिर से कभी घात न करना,
जल जाये चमन ऐसे फ़सादात न करना।

टूटे हुए दिलो का नही है कोई इलाज,
वहशीपन मे कोई ख़ुराफ़ात न करना।

कोशिश रही हैं दर्द को पीने की हमेशा,
हों ज़ख्म हरे ऐसी कोई बात न करना।

नफरत भरी है जिनमे वो कैसे करेंगे प्यार,
नादान बन के ऐसे सवालात न करना।

जुगुनू तमाम रात भटकते रहेगे फिर,
मुट्ठी मे क़ैद अपनी कभी रात न करना।

पत्थर का तो नहीं मुझे अल्फ़ाज का है डर,
दिल टूट जाये ऐसी कोई बात न करना।

इतनी सी इल्तिजा है मेरी आज मान ले,
कल चाहे अकेला से कोई बात न करना।

बत्तीस

पिंजरे मे ये बन्द पखेरु जाने क्या - क्या सहते है,
मैंने जब भी देखा इनके नैना बहते रहते है।

खुश थे कभी तो उड़ते देखा इस डाली से उस डाली,
सीमाओ के बीच घिरे ये अब अपना सर धुनते है ।

पिंजरे का हर तार नुकीला धंसता रहा बदन मे उनके,
जब भी बाहर आना चाहा नए तार वो भरते है ।

सब्ज बाग दिखला कर इनको जिसने कल था कैद किया,
खुला कपाट न पल भर को भी आस मे अटके रहते है ।

पिंजरे का धोखा पंछी ने अब शायद पहचान लिया,
पख तोलने लगे अकेला अब कुछ पल मे उड़ते हैं ।

तैंतीस

लौटे है खाली हाथ ही उनके घरो से लोग,
क्या मॉगते इन बेज़ुबान पत्थरो से लोग ।

जन्नत तो उनके दिल मे है दोजख उन्हीं में है,
क्या ढूँढते है वक़्त के इन खण्डहरों से लोग ।

चुन - चुन के खा गए सभी झीलों की मछलियाँ,
बगला भगत बने हैं जो उजले परो से लोग ।

रहबर थे जो सुना वही गुमनाम हो गये,
अपना पता क्यूँ पूछते हैं बेघरो से लोग ।

ये रंगो - नस्ल जाति वो भाषा के नाम पर,
लड़ने लगे हैं देखिये अब बन्दरो से लोग ।

करने लगे सलाम अकेला अदब के साथ,
वो जिसको मारते थे कभी ठोकरो से लोग

चौतीस

हमारी याद मे क़ायम तेरा शबाब रहे,
तमाम रात सितारो मे माहताब रहे ।

तेरी निग़ाह का क़ायल नहीं है कौन यहाँ,
तुम्हारे वास्ते तो सब खुली क़िताब रहे ।

वो फ़लसफ़े वो ख़यालात याद आयेगे,
तुम्हारे ख़्वाब हमेशा ही लाजवाब रहे ।

तुम्हे न भूल सकेगे किसी तरह प्यारे,
तुम्हारे प्यार के एहसास बेहिसाब रहे ।

तुम्हारे ग़म ने मुझे मात दी मगर ऐ दोस्त,
जहॉ रहे वही हम लोग कामयाब रहे ।

कभी अकेला नही रह सका मै जीवन भर,
तुम्हारी याद रही साथ तेरे ख़्वाब रहे ।

तीस

अँधेरो में दलित ऐसे घिरे थे जब वो आया था,
नजर जिस सिम्त उठती थी अँधेरा ही अँधेरा था।

वो पंडित था न ओझा था न मुल्ला पीर पैगम्बर,
वफ़ा का दे गया तोहफ़ा मोहब्बत का मसीहा था।

उसे हम इसलिए कहते है बाबा भीम ऐ मित्रो,
उसूलो का धनी था वो बस एक इन्सान जैसा था।

चढ़ा कर फूल माला उसके बुत पर ख़ुश तो हो लेकिन,
कभी फ़ुर्सत मिले तो ये भी सोचो वो बशर क्या था ।

बचाओ इस्मतें अपनी बहन बेटी की और माँ की,
सदा उसकी यही थी वो इसी उलझन मे उलझा था।

हज़ारो मुश्किले झेली हज़ारों सख़्तियॉ देखी,
बहुत मज़बूर होकर उसने हिन्दू धर्म छोड़ा था।

अकेला राह मे खाता रहेगा ठोकरे कब तक,
जो पत्थर हैं उन्हे मिलकर हटा लेते तो अच्छा था।

छत्तीस

ख़्वाब कुछ ऐसे बिखरे सारे मंजर छूट गये,
मेरे आँसू मेरी पलकों से ही रुठ गये ।

डूबी शाम दुपहरी की यादो मे रहे घिरे,
परछाई से सारे रिश्ते नाते टूट गये ।

परदे के पीछे ये कैसे - कैसे भेद खुले,
आज खिड़कियों के जब सारे शीशे टूट गये ।

पलको की क्यारी मे कितने फूल खिलाये थे,
लेकिन इक इक करके सारे सपने टूट गये ।

गली-गली मे मज़हब की दूकान लगाये लोग,
बिन सौदा बिन मोल - भाव के हमको लूट गये ।

दुनियाँ के मेले मे अकेला तू है एक अकेला,
सोने - चाँदी क्या माटी के भाँडे फूट गये ।

सैंतीस

मसीहा था उजाला दे गया चमकी दिशाये,
न कह कर हम उसे अब देवता पत्थर बनाये ।

बहुत बद्तर थी हालत जब वो इस धरती पे आये,
स्वय भोगा था हर मौक़ो पे कितनी यातनाये ।

वो तन्हा जग मे उतरा ख़िलाफे ज़ुल्मों-ज़िल्लत,
सहे थे घाव कितने हम तुम्हे कैसे बताये ।

चढ़ा कर फूल - माला यूँ किसी बुत पर न खुश होना,
अँधेरा है बहुत बाकी मशाले कुछ जलाये ।

कही ओझा कही पर ज्योतिषी पंडों में उलझे थे,
चलो इन बधनो को तोड़ कर इक युग नया लायें ।

अकेला लोग कहते है कि कुछ अपनी सुनाओ,
जो गुज़री है कभी हम पर उसे कैसे सुनायें ।

अड़तीस

कहने को प्रात मगर रात का अँधेरा है,
कैसे दुर्भाग्य का शिकार देश मेरा है।

भागती है छाँव की तलाश में चिरैया,
डाल-डाल पर देखा बाज का बसेरा है।

चुप बैठे मदिर मे देव और देवियाँ,
गली गली दानव का पड़ा हुआ डेरा है।

अपना घर फूँक कर वो ढूँढते हैं रोशनी,
अपनी सतान कहे गॉव मे अँधेरा हैं ।

दायरे सिमटते ही जा रहे है अब हर पल,
दावा वसुधैव का कुटुम्ब एक मेरा है ।

इक ज़रा सी माली की गफ़लत से इन दिनो,
फूलो को मनमानी कॉटो ने घेरा है ।

मेरे उजियाले चुरा लिए अँधेरों ने,
और उन अँधेरे का मेरे घर बसेरा है ।

सूरज अकेला बिखेरता उजाला पर,
धरती को धुंध की घटाओ ने घेरा है ।

उनतालीस

कुछ सिर फिरो ने वक्त का रुख मोड़ दिया है,
घर अपनी आस्थाओ का फिर तोड़ दिया है ।

इन्साफ़ उसको कैसे मिले ये बताइये ,
पादान आख़िरी ही जिसने छोड़ दिया है ।

अपने धरम का आप ने पालन नही किया,
वहशीपने मे सोच का रुख मोड़ दिया है ।

इन्सानियत की शक्ल न जिसमें उभर सकी,
उस आइने को हमने अभी तोड़ दिया है ।

अल्लाह अब अकेला हिफ़ाजत तेरी करे,
टूटे दिलो को जिसने फिर जोड़ दिया है ।

चालीस

अपनी उम्मीद को फूलो से सजाना होगा,
रास्ता ख़ुद ही हमें अपना बनाना होगा ।

हर क़दम राहे तरक़्क़ी पे बढ़ाना होगा,
सिर्फ़ कह कर ही नहीं चल के दिखाना होगा ।

यूँ तो उड़ान मन की सभी रोज भर रहे,
पंख पहले तो मगर यार लगाना होगा ।

गर तुम्हे आज निकलना है किसी से आगे,
ख़ुद को बेरहमो की चालो से बचाना होगा ।

दीप हर घर मे जले रह न अँधेरा जाये,
बस चिराग़ो से चिराग़ो को जलाना होगा ।

कब से धरती के विधाता वो बन के बैठे है,
पहले उनके ही विधानों को जलाना होगा ।

अपनी धरती के न हो जायें ये ज़ालिम हकदार,
मिल के हर हाल मे ये देश बचाना होगा ।

मैं अकेला ही नही भार उठा पाऊँगा,
कुछ न कुछ आप को भी हाथ बढ़ाना होगा ।

इकतालीस

उन्हे भरम है कि वो अब तो खुद निज़ाम हो गये,
मगर कुछ और तबाही के इन्तेजाम हो गये ।

उन्हे ये फ़िक्र कि बच्चे हमारे दून मे पढ़ें,
हमारे बच्चे मगर रोटियो के दाम हो गये ।

है उनकी पूजा वही उनकी इबादत भी है वही,
ख़ुदा व राम सियासत के एक नाम हो गये ।

डोलियाँ ले के चल रहे है जब लुटेरे ही,
हादसे लूट के हर ओर अब तो आम हो गये ।

वो जिनको जेल में होना था हैं वही साहिब,
न्याय के घर तो गुनाहो के ही मुक़ाम हो गये ।

अकेला हो न यूँ गुमनाम अब कोई जीवन,
तलाश बाकी रही कितने सुब्हो- शाम हो गये ।

बयालीस

आदमी की तहें खोलते हैं,
जब कभी आइने बोलते है।

लोग गूँगा समझते है हमको,
इसलिए हम भी कम बोलते हैं।

उड़ गए कुछ तो पिंजरा ही लेकर,
और जो बाक़ी है पर तोलते है।

कोई तूफान आयेगा शायद,
आज पत्ते भी कम डोलते हैं।

मेरे अशआर छू लेगे तुमको,
मेरे लहजो मे ग़म बोलते हैं।

उनकी औक़ात मै जानता हूँ
मेरा हर लफ्ज़ जो तोलते हैं

आदमी वो नही है अकेला,
ज़हर नस-नस में जो घोलते है

तैंतालीस

टूट रही अस्मिता वतन की अगर बचाना है,
पहले भूल-भुलैया से ही बाहर आना है

परिभाषा उत्थान-पतन की अपनी कोई बनायें,
घेरे-बन्दी कही कही पर टूट रही सीमाये,
शब्द कोष उनकी ख़ातिर इक नया बनाना है ।

पल-पल घटती बढ़ती देखा ये सीधी रेखाये,
लोग ढूढ़ते है सीधी रेखा में भी त्रिज्याये,
लेकिन इस जीवन को हमे एक वृत्त बनाना है ।

सोने के ये हिरन तुझे पग-पग पर लूटेगे,
ऑख खुली तो सारे सपने खुद ही टूटेंगे,
अनजानी राहों से पार क्षितिज के आना है

ताने - बाने से अपने जब बाहर आओगे,
सिर्फ़ अकेला ख़ुद को पाओगे पछताओगे ।
सीधी सी यह बात तुझे कब तक समझाना है ।

चौवालीस

घोर अँधेरे को ही जब वो बिखरी धूप कहे,
फिर हम कितना सच बोले और कितना झूठ कहें।

आओ हम भी रस्म निभाये
अर्ध सदी का जश्न मनाये,
दूरदर्शनी शिक्षा का बस,
परदे पर प्रसार कराये,

पेड़ो के नीचे बिखरा है रुप अनूप कहे।

कहने को तो भरी बखारी
पर तन सूखा लाज उधारी,
कर्ज़ दे रहे कर्ज़ ले रहे
मची हुई है मारा - मारी,

रहजन को हम शान से रहबर का प्रतिरुप कहें।

हमने पढ़ा है तुमने पढ़ा था
उसकी प्रतिमा किसने गढ़ा था,
रोज़ बना कर तोड़ रहे क्या
इसीलिये परवान चढ़ा था,

चेलो को कितना हम बाबा के अनुरुप कहे ।

शोर तो हैं सब भाई-भाई
जाति-धर्म की रोज़ लड़ाई,
किसका शासन क्या अनुशासन
सबको आज़ादी की दुहाई,

देश तेरे इस रुप को सुन्दर या विद्रूप कहें ।

दबी भीड़ मे आह जहॉ हो
मुस्कानो की चाह जहॉं हो,
चलना है ऐ दोस्त उधर ही
घर की अपनी राह जहॉ हो,

बदला आज़ादी का अकेला कैसा रुप कहे ।

पैंतालीस

खुशियो से था भरा हुआ जिसका कभी चमन,
रोती है ज़ार-ज़ार वही मादरे वतन ।

करती रही दुआयें बला टालती रही,
ख़ूने ज़िगर पिला के जिसे पालती रही,
हर राह हर क़दम पे जो संभालती रही,
उसके ही दुलारो ने उसे कर दिया नगन ।

ख़्वाबो के घरौंदे तो सभी टूटते रहे,
कटती रही पतग उसे लूटते रहे,
बारिश हुई बनो मे नगर सूखते रहे,
मौसम हो कोई उसके है भीगे हुए नयन ।

थे जो सपूत तेरे सभी काम आ गए ,
ये कौन हैं जो आज ज़माने पे छा गए,
था डूबना जिन्हे वही साहिल पे आ गए,

बस ताज़-पोशियों मे हमारा हुआ पतन ।

अँधे चले मशाल लिए राह दिखाने,
गुमनामियो मे खो गए है ठौर-ठिकाने,
घर लौट के हम आयेगे भगवान ही जाने ,

रहबर का इस कदर से है बिगड़ा हुआ चलन ।

बिकने-ख़रीदने का चलन आम हो गया,
गहना हर एक माँ तेरा नीलाम हो गया,
रावन जो था गली का वही राम हो गया,

बारुद के ढेरो से मिली है हमे जलन ।

ससद सड़क के बीच वही दूरियाँ रही,
भटके जहाँ से हम वही कस्तूरियाँ रहीं,
आधी सदी के बाद भी मज़बूरियाँ रही,

है कौन जो अकेला सुधारेगा आचरन ।

छियालीस

साख से टूटा फूल चमन क्यों रोता है,
कोई बिछड़ता है तो ऐसा होता हैं

किस बगिया के फूल कहाँ पर खिलते हैं,
ये है एक संजोग जो हमसे मिलते है
यादो की उड़ती धूल पवन चुप होता है ।

इस जग को हम एक सराय कहते है
चन्द घड़ी बस एक साथ मे रहते है
सब कुछ जाता है भूल याद कुछ होता है ।

रिश्ते - नाते के बीच जुड़ा इक सपना है,
कुछ ऐसा एहसास कि यह जग अपना है,
जब होती है भूल तो ये मन रोता है

जब चला अकेला छोड़ अजानी मंज़िल पर,
रह गये खड़े सब दोस्त यार सजनी दिलवर,
ख़ुद से लेना तब पूछ किसे क्या होता है ।

क़ताअ

सैंतालीस

उड़ान
भले आज भर ले हवा मे उड़ाने,
बदलता रहे नित नये आशियानें,
तेरा ज़र है तेरी ज़मी है ये सारी,
तू फ़ैला ले जितने भी हो ताने बाने।

एहसास
महल कुमकुमो से तेरा जगमगाये
मगर झोपड़ी का दिया बुझ न जाये,
अरे आसमॉ को फ़तह करने वाले
ज़मीं का सकूँ अब कही छिन न जाये।

हौसला

सर बुलन्दी जिसे हासिल है वो सर रखते है,
हम तो हर हाल मे जीने का हुनर रखते है,
वक्त की सर्द हवाये न डराये हमको
हम तो तूफ़ान मे पलने का जिग़र रखते हैं।

xxxx

अड़तालीस

लक्ष्य

जिन्दगी की जीत पर विश्वास रखना चाहिये
आदमी को इक नया इतिहास रखना चाहिये,
सिर्फ धरती की सफलता ही नही बस लक्ष्य है
ध्यान मे अपने तो ये आकाश रखना चाहिये ।

ज़िन्दगी

ताने - बाने मे जाने क्या बटती रही
आवरन मे भरम के लिपटती रही,
जोड़ते रह गये रात - दिन हम जिसे
जिन्दगी साल दर साल घटती रही ।

लग्ज़िश

गम बेहतर करने की कोशिश करता हूँ
मैं अपने जख्मो की नुमाइश करता हूँ,
मुझसे इबरत हासिल करने आये लोग
इसीलिए मै रोज ये लग्ज़िश करता हूँ ।

उन्चास

सपने
आँखों ही ऑखो मे सपने बुनता हूँ
पलको से खुशियो के फूल मैं चुनता हूँ
जब कुछ हासिल हमें नही होता है फिर
अपने किये पर अपना ही सर धुनता हूँ।

दुनियॉ
यहाँ लोगो मे मक्कारी बहुत हैं
हर एक जेहनो मे बीमारी बहुत है
अकेला मैं हूँ सीधा सादा इन्सॉ
मगर लोगो मे हुशियारी बहुत हैं।

बेवसी
अपना हर इल्ज़ाम मुझी पे धरता है
जो भी है वो ज़र्फ की बातें करता है,
बेटो को परवाह नहीं कि उनका बाप
घर बैठे - बैठे क़िस्तो में मरता है।

पचास

बेरहमी

जख्म दिखाओं तो दुनियाँ खुश होती है
और हँसो तो बैठ अलग वो रोती है,
जब मुफ़लिस का घर लुटता है आधी रात
आवाज़े सुन कर भी चैन से सोती है।

वक्त

वक्त के हाथ मे इन्सान बिका करते है
बात की बात पे ईमान बिका करते है,
लोग वे मोल भी करते रहे ख़रीदारी
मुफ़लिसो के यहाँ अरमान बिका करते हैं।

पहचान

पूजा करूँ ताउम्र मैं इन्सान तो मिले
इन्सान के दिल में कही ईमान भी मिले,
है कोई मुझसे बात करे मेरी भी सुने
इन्सानियत की थोड़ी सी पहचान तो मिले।

इक्यावन

फैसला

हम अँधेरो से निकल आये बहुत अच्छा हुआ
साथ मेरे तुम न आ पाये बहुत अच्छा हुआ,
हूँ अकेला साथ भटकेगा कहाँ तक तू मेरे
सोच कर यह तुम भी घबराए बहुत अच्छा हुआ ।

दर्द

मस्जिद न रहेगी वहाँ मंदिर न रहेगा
जब इस ज़मी पे आदमी का खून बहेगा,
हर इक के ज़ुल्म हमने सहे हैं ग़लत नही
पन्ने पलट के देख लो इतिहास कहेगा ।

इन्सानियत

हज़ारो दर्द सहते है शिकायत हम नहीं करते
शराफत देखकर अपनी शरारत हम नहीं करते,
हमे वो आज कम तर जानते हैं अपनी नज़रो मे
मगर सच है कि अब भी उनसे नफ़रत हम नही करते ।

बावन

तरक्क़ी

मानता हूँ तरक्क़ी हुई देश मे
बात कुछ कायदे की हुई देश मे,
याद रखना कि है ज़ात बाकी अभी
कुछ विभीषण व जयचन्द की देश में ।

दिया

आये कोई हवा मैं तो जलता रहा
देखकर रोशनी मै मचलता रहा,
नेह - बाती घटी तन पिघलता गया
मै अँधेरो को तेरे निगलता रहा ।

यादे

खामोश हूँ मै अब कोई शिकवा न गिला है
मुझको तेरी चाहत ने यह ईनाम दिया है,
ज़िन्दा हूँ मै इक तेरी ही यादो के सहारे
वरना तो ये दुनियॉ कोई जीने की जगह है ?

तिरपन

पछतावा

ज़माने मे क्या तू सुकूँ पायेगा
भटकते हुए घर को लौट आयेगा,
ये दुनियाँ है दौलत की मारी हुई
अकेला उलझ कर भी पछतायेगा ।

वज़ूद

आइना मुझसे यूँ लगा कहने
किस क़दर तुम उदास लगते हो,
तुम अकेला तो बन गए लेकिन
आज भी रामदास लगते हो ।

ग़म

ग़म न देता साथ तो हम मर गए होते कभी
दिल जलो के घाव भी सब भर गए होते कभी
शुक्रिया ऐ दोस्त तू ही तो रहा साथी मेरा
वरना पढ़कर फ़ातिहा अपने गए होते कभी ।

चौवन

लफ्जो के फूल

उसने मेरे सर पर अक्सर अगारे बरसाये है
ज़ुल्म सहे है सदियो मैने जी भर के मुस्काये है,
ज़ख्मो की रुदाद न पूछे कोई अकेला से
दर्द की क्यारी मे मैने लफ़्ज़ो के फूल खिलाये है।

शायरी

इश्क मुकम्मल कर देती है
दुनियाँ पागल कर देती है,
झूठो की महफ़िल मे जाकर
शायरी हलचल कर देती है।

अन्दर की आवाज

मेरा सबसे मिलना था इक इन्सानी अन्दाज़
कोई न इसमे भेद छुपा था और न कोई राज़,
मेरी तरह से तू भी इक दिन देगा सच का साथ
जाग उठेगी जिस दिन तेरे अन्दर की आवाज़।

पचपन

दुआ

मुझको इज़्ज़त या रब मनचाही दे दे
रंगे तबीयत को मेरी शाही दे दे,
बस इतनी फरियाद अकेला की या रब
मेरे सादा लफ़्ज़ो को स्याही दे दे।

प्यार

प्यार नीलाम हो जायेगा
दर्द बदनाम हो जायेगा
इश्क कब तक छुपाऊँगा मै
एक दिन आम हो जायेगा।

आस्था

लोग अफ़साने सुनाते ही गए
देवता उनको बनाते ही गए,
जानकर भी ज़हर की तासीर को
दूध साँपो को पिलाते ही गए।

छप्पन

ज़रुरत

हर आलम में तकाज़ा कर ही देगी
वो रस्ते मे भी शिकवा कर ही देगी,
मै हर शब थक के मर जाऊँगा लेकिन
ज़रुरत मुझको ज़िन्दा कर ही देगी ।

क्यूँ

ये जीवन है कि जीने की सज़ा है
मेरा दुश्मन मुझी से पूछता है,
मेरी हालत पे वो खाया तरस क्यूँ
मुझे लगता है पागल हो गया हैं

सच बात

सच है कि वो सच बात को कहने नहीं देते
इन्सान को इन्सान भी रहने नहीं देते,
पत्थर तो तराशे गए पूजे भी गए हैं
पानी को मगर धार पे बहने नही देते ।

प्रकाशनाधीन गीत संग्रह से -

-: फिर रावन मारा जायेगा :-

सदियो से ये आस लगी है राम राज कब आयेगा।
अबकी बार दशहरे में फिर रावन मारा जायेगा।।

दशरथ के सग तीन रानियाँ फिर परदे पर आयेगी,
श्रृगी ऋषि का फल खा-खा कर चार पुत्र जन्मायेगी,

एक बार फिर कैकेयी का वचन निभाया जायेगा।
बाप मरेगा घर से प्यारा पुत्र निकाला जायेगा।।

बचपन से मरने तक लीला परदे पर की जायेगी,
धरती की बेटी सीता फिर धरती मे धँस जायेगी,

एक बार फिर भाई विभीषण दुश्मन से मिल जायेगा।
सोने की लका माटी में फिर एक बार मिलायेगा।।

गली-गली मे बीच सड़क पर लीलायें की जायेगी,
हाव-भाव भंगिमा दिखा कर शिक्षायें दी जायेगी,

परदे के पीछे सब उलटा वही नजारा आयेगा।
बेटे के बंगले में बूढ़ा बाप नहीं रह पायेगा।।

दशरथ राम और कौशल्या मिल कर चक्र चलायेंगे,
सीताओ की ज़िन्दा लाशे घर मे रोज जलायेंगे,

बिना गवाही न्यायालय मे न्याय नहीं मिल पायेगा।
अपनी करनी का फल केवल जनक हमेशा पायेगा।।

कब तक आदर्शो की थोथी कथा सुनाई जायेगी,
कथनी करनी के बीच पड़ी कब लीक मिटाई जायेगी,

दिल के रिश्तों के सहज भाव जिस दिन मानव अपनायेगा।
हर घर मे अपने आप 'अकेला' राम राज आ जायेगा।।

आइने बोलते हैं · एक नजर

□ दानिश

इटली की महिला पत्रकार मित्र मारियोला आफरीदी ने अपनी भारत यात्रा के दौरान कहा था – "दानिश, मैं तुम्हारे शहर गयी थी । बनारस के तमाम कवियो से मिली । मुझे इतने लोगो को कविता करते हुए देखना दिलचस्प लगा । इटली मे तो कभी–कभी ही कोई कवि होता है ।

मारियोला ने भारतीय लेखन के मूल की ओर संकेत किया था । वास्तव मे वेदा से लेकर नाट्य शास्त्र तक सम्पूर्ण भारतीय वाङमय काव्य रूप मे ही रचा गया । भारत के किसान जीवन मे कविता का स्थान बहुत बडा है । खेती के आरम्भ से फसलो की कटाई तक ग्रीष्म की दहकती दोपहरो से बसन्त के आगमन तक भारतीय जीवन अपनी प्रसन्नताओ और दुःखों को कविताओ के द्वारा अभिव्यक्त करने का आदी है ।

इन्ही दिनों जब मेरी पहली मुलाकात डाक अधीक्षक श्री राम दास अकेला से हुई तो मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ कि इतने व्यस्त जीवन मे एक अधिकारी इतनी अच्छी कविता कैसे कर लेता है । मुझे खूब याद है – तब उनकी कविताये डाक जीवन की तस्वीरें उकेरती थी । बेशक मै इसे उकेरना ही कहूँगा – गोया कोई पत्थर पर आहिस्ता आहिस्ता कुछ लिख रहा हो जो कभी मिट नही सकता । बेहद खुशी के साथ मेरे दिल ने उन्हें अपना लिया तब से उनके लेखन में अनेक मोड आये । छन्द मुक्त कविताओ से लेकर गीत और गजल तक उनका सफर जीवन के अनेक

डा0 कलीम कैसर ने अकेला जी की शायरी को "अर्थपूर्ण इतिहास" कहा जिसे नकारा नही जा सकता – "महलो मे रहने वाले भूखे है कितने, मेरे कुछ टुकडो पर घात लगाये हैं ।"

बेशक "अकेला" की शायरी अपने समय की विसगतियो का दस्तावेज है । आधुनिक भारत की तस्वीर खीचते हुए वे समाज मे जारी बन्दर बॉट और गरीब जनता के हितो को नजर अन्दाज किये जाने की साजिश को बेनकाब करते है । अकेला के गीतो मे बनवासी राम की तरह आम आदमी की तस्वीर उन्हे कबीर के राम के बहुत करीब ले जाती है जिन्हे समझने के लिए स्मृतियो के अन्धेरो मे भटक जाने का अवसर नही बल्कि वे कविता को एक मुकम्मल बयान कहन के पक्षधर है –

मेरे बच्चे दूध की एक बूँद को तरसा किये ।
और भर – भर कर घडे अभिषेक वो करने लगे ।।

एक सीधा सपाट बयान जो पाठक को चकित करता है । इस अन्दाज मे कविता करना "अकेला" का स्वभाव है --

वो ही ईसा वो ही मूसा, वो गुरू वो राम भी ।
हम समझते है, मगर तू भी समझ पाये तो ठीक ।।

"आइने बोलते है" के रचना ससार मे उतरते हुए न जाने क्यो यह एहसास सा होने लगता है कि इस कवि की स्मृति भारतीय समाज के दलित–शोषित जन के इर्द गिर्द घूमती है –

आग से तो बच गये, बनवास था ।
हर सदी मे फिर हमी तपते रहे ।।
जिनसे उम्मीदे वफा की थी वही ।
आस्तीन के सॉप बन डसते रहे ।।

आदिम स्मृतियो का धनी है, कवि 'अकेला' का मन –

चुन–चुन के खा गये, सभी झीलो की मछलियॉ ।
बगुला भगत बने है, जो उजले परों के लोग ।।

भूतपूर्व राज्यपाल अरूणाचल प्रदेश माननीय माता प्रसाद जी ने अपने लेख मे "अकेला" जी इस प्रथम कृति के विषय मे अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा – शायर गॉव में भेद भाव के अन्धेरो से दु खी है । लोग बाते तो "वसुधैव कुटुम्बकम्" की करते है, पर गॉव की सामाजिक स्थिति देखने पर यह सत्य नहीं ठहरता गॉव अन्धेरे मे है –

कहने को प्रात मगर रात का अधेरा है ।
कैसे दुर्भाग्य का शिकार देश मेरा है ।।
दायरे सिमटते ही जा रहे है, अब हर पल ।
दावा वसुधैव का कुटुम्ब एक मेरा है ।।

आइने बोलते हैं के विषय मे कर्नल तिलक राज चीफ

अभिव्यक्ति दी – "जीवन मे जो तरलता, हरीतिमा, राजनीतिक कुचक्रो के बाद अभी भी शेष है, उसे सुरक्षित रखने के लिए कवि सचेत है ।

जहाँ पसीना गिरे आपका,
वहाँ हमारा लहू बहे ।

कवि अपने परिवेश से प्रतिबद्ध जुडाव रखता है । कभी सोने की चिडिया कहे जाने वाला देश किस साजिश के तहत एक कत्लगाह मे बदल गया, इसकी रचनाकार को गहरी समझ हे । यह पीडा कई गजलो मे व्यक्त है –

प्यास खूँ की, भूख दौलत की, अजब इन्साँ मे है ।
झूठ बेरहमी तो ऐसी भी कहाँ शैताँ मे है ।।

बेशक रामदास अकेला सामाजिक और राजनैतिक परिवेश से जुडे जन प्रतिबद्ध रचनाकार है लेकिन वो कभी कविता के उन लमहात से बेखबर नही जो कविता को शास्त्रीयता की ओर ले जाते हे –

याद भी उनकी खुशबू दे,
दान मुझे ये रब तू दे ।
ये मुझको रूसवा कर देगी,
इच्छाओं पर काबू दे ।।
जिन्दगी की बस इतनी कहानी रही ।
ये भिखारन कभी राजरानी रही ।।
दुनियाँदारी मे मशगूल ऐसे रहे ।
सोच पाये न क्या रही

दरपन मे जब आये लोग,
खुद से बहुत शरमाये लोग ।
पाप करे खुद लेकिन उँगली,
मेरी ओर उठाये लोग ।।

अकेला की इन गजलो को पढते हुए गजल की रिवायत और तहजीब का खयाल आता है जो आधुनिक दौर मे कविता को प्रासगिक बनाये रखने मे सक्षम है । आइने बोलते है की कविताएँ गौर किया जाय तो एक इन्सान के सन्त हो जाने की गवाही देती है ।

जालिमों से भी मेरे यार मुहब्बत रखना ।
जुल्म के सामने रखना तो बगावत रखना ।।
हर कोई यूँ तो अकेला हैं, मुसाफिर है सभी ।
दो कदम साथ रहें लोग, वो चाहत रखना ।।

अथवा –

कोशिश रही है दर्द को पीने की, पी गये ।
हो जख़्म हरे ऐसी कोई बात न करना ।।
जुगनू तमाम रात भटकते रहेगे फिर ।
मुट्ठी में कैद अपनी कभी रात न करना ।।

ऐसे शेर कहना कवि का स्वभाव है यानि कविता का साफ उद्देश्य है – कला कला के लिए नही वरन् जीवन के लिए है । एक मानवीय उजास उनकी शायरी मे मौजूद है । उनकी भाषा में एक अनगढपन है । वे पारम्परिक भाषा के औजारों से काम नही लेते पत्थर काल के उसी आदिम आदमी की तरह भाषा

के प्रदेश मे प्रवेश करते हैं जो चकमक से आग जला रहा है पथरीली गुफाओ मे घर बना रहा है

दरअसल "अकेला" का सम्पूर्ण लेखन नये समाज की रचना की इच्छा से अकेला निकल पड़ा है ।

☐ दानिश

मेरे विचार से —

उर्दू गजल एक ऐसी गगा जमुनी तहजीब का नाम है जिसमे हिन्दुस्तानी रवायतो का दिल धडकता है। ऐसी रवायते जो सदियो के इतिहास मे अपनी पहचान रखते हैं। आज गजल की महबूबियत और मकबूलिअत मे हमारे हिन्दी दॉ अहबाब भी बराबर के शरीक है।

मैंने रामदास अकेला जी की तमाम गजले अच्छी तरह पढी है। इनमे जो तहजीब सॉसे ले रही है वह आज के समाज की देन है। इनकी गजले फिर भी अपनी परम्पराओं से अलग नही हुईं। अकेला जी एक शायर की हैसियत से साधुवाद के हकदार है जिन्होने आईने को चेहरो की जगह जबान दी है ताकि वो बोलकर अपने दुखदर्द, हालात्, जज्बात की गवाही दे सके। मुझे ग़जल की इस तहजीब पर खुश होना चाहिए। नेक ख्वाहिशात के साथ।

पद्मश्री बेकल उत्साही

(पूर्व सासद)

गीताज उ0प्र0

शुभ सदेश —

कर्नल तिलकराज

चीफ पाम्टमास्टर जनरल पजाब सर्किल, चडीगढ़।

गजल संग्रह "आईने बोलते है" के लोकार्पण के पावन अवसर पर आपको हार्दिक बधाई। इसकी गजलो मे काव्यात्मकता और सगीतात्मकता का सुन्दर सुमेल है, वह पाठक को बरबस अपनी ओर खीच लेता है। श्रीकृष्ण ने गीता मे ठीक ही कहा है कि – अगर किसी को मनुष्य रूप मे मेरा दीदार करना हो तो वह मुझे कवि के रूप मे देख सकता है। आप कवि है, इसलिए धन्य है।

श्री तेजराम शर्मा

चीफ पोस्टमास्टर जनरल, हरियाना, अम्बाला।

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि श्री एस0पी0ओझा, चीफ पोस्टमास्टर जनरल, उ0प्र0 के मुख्य आतिथ्य मे आपके गजल सग्रह "आईने बोलते है" का लोकार्पण पद्मश्री जनाब बेकल उत्साही के कर–कमलो द्वारा हो रहा है।

इस शुभ अवसर पर हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाये।

श्री एस0पी0ओझा

चीफ पोस्टमास्टर जनरल, उ0प्र0।

आइने बोलते है कृति मे राम दास अकेला ने समाज मे व्याप्त अव्यवस्था और विषमता पर चोट की है तथा जीवन की अनेक विद्रूपताओ को भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है यह कृति उनकी रचना-शीलता का वास्तविक आइना है।

निस्सदेह वह प्रशसा के पात्र है कि उन्होने डाक विभाग के व्यस्ततम वातावरण मे रहने के बावजूद सरस गीत-गजलो का सृजन किया है। मुझे विश्वास है कि उनकी यह कृति सुह्रद पाठकों को अवश्य आनन्दित करेगी

कर्नल कमलेश्वर प्रसाद

पोस्टमास्टर जनरल गोरखपुर

"आईने बोलते है" के लोकार्पण के अवसर पर आपको शुभ कामनाये।

श्री श्रीनिवास राघवन

पोस्टमास्टर जनरल, चेन्नई।

यह जानकर मुझे बडी प्रसन्नता हो रही है कि आप के गजल संग्रह "आईने बोलते हैं" का लोकार्पण हो रहा है। आप को मेरी तरफ से बधाइयॉ। ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि आपकी इस क्षेत्र मे दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति हो।

श्री के०के० भगत

निदेशक डाक सेवाये गोरखपुर।

आप के गज़ल सग्रह "आईने बोलते है" के लोकार्पण के अवसर पर आपको हार्दिक शुभ कामनाये।

खुशबू दे

याद भी उसकी, ख़ुशबू दे
दान मुझे ये रब तू दे

हर मजर रोने वाला है
इन ऑखो मे ऑसू दे

ये मुझको रुसवा कर देगी
इच्छाओ पर काबू दे

ग़म की राते चमकाने को
पलको पर कुछ जुगनू दे

फसल लहू से सींची थी जब
क्यो न ये धरती बालू दे

मै तुझ को क्या दे सकता हूँ
जो भी देना है तू दे

जब जब पुरवा बहे अकेला
ज़ख्म हमारा ख़ुशबू दे ।

सफ़र

जाने कैसी हवा का असर है,
सहमा - सहमा हुआ हर बशर है ।

क्या तिजोरी मे है कौन जाने ,
बन्द ताले पे सबकी नज़र है ।

है पडोसी ने मुझको बुलाया,
एक उडती हुई ये ख़बर है ।

देख कर कातिलाना अदाये,
कह दूँ कैसे कि वो मोतबर है।

उसने अमृत कहा पी गये हम,
जब कि मालूम था ये जह्र है ।

आये ठंडी हवा फिर कहॉ से,
जब कि शोलो पे हर गॉव -घर है ।

परसों डोली उठी कल जनाजा,
जिन्दगी किस कदर मुख़्तसर है ।

काफ़िले चल रहे है अकेला ,
ख़त्म होता नहीं ये सफ़र है ।

कॉंटों में उलझायें लोग

दरपन मे जब आये लोग,
खुद से बहुत शरमाये लोग ।

पापो के कुछ भरे घडो से,
गगा को नहलाये लोग ।

छीन झपट के गैर के तन से
अपना कफन जुटाये लोग ।

अपनी काली करतूतो से,
दिन को रात बनाये लोग ।

पाप करे ख़ुद लेकिन उँगली,
मेरी ओर उठाये लोग ।

साये भी जब लगे डराने,
कहाँ भाग कर जाये लोग ।

नीद उड़ गई आँखो से अब,
सपने कहाँ सजायें लोग ।

मजिल तो है दूर अकेला,
राह मे थक ना जाये लोग ।

जान जब तक जॉ मे है

प्यास खूॅ की भूख, दौलत की अजब इन्सॉ मे है,
झूठ बेरहमी तो ऐसी भी कहॉ शैता मे है ।

अब सलामत झोपडी कोई भला कैसे रहे,
जब खयाली ही महल तामीर हर अरमॉ मे है ।

कौन सी उम्मीद पे जी पाये कलियो का चमन,
जब कि रितु पतझड की और काटा हर इक दामाँ मे है ।

बेरहम मॉझी लिये पतवार फिरते देश की,
डगमगाती नाव कब से गर्दिशे तूफॉ मे है ।

किस तरह विश्वास वादों का करे अब आदमी,
आज तक तो खोट ही पाया गया ईमॉ मे है ।

गर बचानी है दिशायें हर कोई यह जान ले,
हो कही भी कोई लेकिन जंग के मैदॉ मे है ।

साथ कोई कब चला है जानिबे मजिल यहॉ,
तू अकेला ही चला चल जान जब तक जॉ में है ।

बचा लीजिये

मै भी हूँ बज्म में ये बता दीजिए
जामे उल्फत मुझे भी पिला दीजिये ।

राम रहमान जब एक ही है तो फिर,
क्यूँ न दीवारे नफ़रत गिरा दीजिए

दूर रहना हमारा खलेगा बहुत,
फासला दिल से पहले मिटा दीजिए

हर तरफ आग भडकेगी फिर शहर में,
अपने दामन से यूँ ना हवा दीजिये ।

खूँ बहा कर न दगो मे जाया करे,
हो सके तो वतन पर बहा दीजिए ।

गर जलानी है होली अभी आइये,
नफरतों के इरादे जला दीजिये ।

क्यों है मजिल अलग और सफ़र भी अलग
राज सबको अकेला बता दीजिए

तलाश

किस मे जज़्बा है अब शहादत का,
हर तरफ दौर है क़यामत का ।

था ज़माना कभी शराफते का,
दौरे हाज़िर है बस बगावत का ।

अब लुटेरे करेंगे रखवाली,
रब है मालिक मेरी रियासत का ।

है जो सदियो से बन्द गलियों में,
मुन्तज़िर है वही शरीयत का ।

झूठ मक्क़ारी और दग़ा फ़ितरत,
दल बदल रंग है सियासत का ।

जिनके ज़ेहनो मे है गुबार भरा,
रग चेहरे पे है शराफत का ।

चल अकेला करे तलाश कही,
रह गुज़र अब कोई सदाक़त का ।

घर में रक्खा था

दिया जला के जहाँ दोपहर मे रक्खा था,
मेरा वजूद उसी रह गुजर में रक्खा था।

ये जिन्दगी तो है गुजरी तलाश में उसकी,
सुकूने दिल उसी बेबस नज़र मे रक्खा था।

फकीर था न वो साधू न धर्मो मजहब था,
कबीर का जो जनाजा अधर मे रक्खा था।

वो सो गया तो जगाये कभी न जागेगा,
कि हमने अपना मुकद्दर सफ़र मे रक्खा था।

सफीना डूब रहा था हमारा साहिल पर,
मेरा नसीब ही पानी के घर मे रक्खा था।

जहाँ पे होठ रखा था मेरी तमन्ना ने,
ख़ुशी का अश्क़ वही चश्मेतर में रक्खा था।

वो रामदास परिन्दा भी उड गया आखिर,
बडे जतन से जो मिट्टी के घर में रक्खा था।

'अकेला' जब कि अकेला नही था फिर कैसे,
निकल गया वो असासा जो घर मे रक्खा था।

संक्षिप्त परिचय

नाम	रामदास अकेला
पिता	स्वर्गीय बलिराम भगत
जन्म	. 24 मार्च सन् 1942
जन्मस्थान	ग्राम– लखनेपुर, पो0– घनश्यामपुर, जिला– जौनपुर।
परिवार एव परिवेश	एक दलित, मजदूर परिवार से उत्पन्न एवम् सामाजिक विसंगतियो, कुरीतियो और अधविश्वासो के भुक्तभोगी।
शिक्षा	· इन्टरमीडिएट
पेशा	नौकरी डाक विभाग मे सन् 1962 से वहैसियत, क्लर्क भर्ती।
सप्रति	: सीनियर पोस्टमास्टर।
रचनाधर्मिता	: सन् 1965 से गीतों, कविताओ, ग़जलो का सतत् लेखन, आकाशवाणी से नियमित काव्यपाठ।
प्रकाशित रचना	· "आईने बोलते है" गजल सग्रह।
शीघ्र प्रकाशन	: दो काव्य सग्रह
वर्तमान स्थायी पता	सा0 2/398डी–5, पाण्डेयपुर, वाराणसी–221002
दूरभाष	586407